B.A. Part 1. हिन्दी रचना (आनर्स)

सरस्वती वंदना – सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ नव जलद-मन्द्र रव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर नव स्वर दे!
वर दे वीणा वादिनि वर दे!

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (21 फरवरी 1896 – 1961) हिन्दी के छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक माने जाते हैं। निराला हिन्दी में मुक्तक छन्द के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। 'सरस्वती वंदना' इनकी प्रतिनिधि रचनाओं में से एक है।

कवि माँ सरस्वती

Scanned with CamScanner

से प्रार्थना करता है कि वह हम भारतवासियों को अमरता का वरदान दें। माँ सरस्वती से वंदना की गयी है कि वह भारत से अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश भर दे। आप हमारे हृदय में पनपने वाले सारे बंधन को काट दें जिसे भारतीयों के भीतर जो पाप दोष एवं अज्ञानता है वह दूर हो जाय और आप अपने हृदय प्रकाश से उन समस्त भारतवासियों को जगमग कर दें। कवि भारतमाता से वरदान माँगता है कि भारतवर्ष में प्रेम और स्वतंत्रता का हर जगह अधिकार हो। माँ सरस्वती से

कवि प्रार्थना करता है कि तुम हम भारतवासियों के भीतर नई बातें, नई लय, नई ताल व नए छन्द, नई वाणी और बादल के समान गंभीर स्वरूप प्रदान करो। तुम नए आकाश में विचरण करने वाले नए नए पक्षियों के समूह को नित्य नए-नए स्वर प्रदान करो। माँ सरस्वती हमें ऐसा ही वर दो।

यह निराला की ऐसी प्रतिनिधि रचना है जो पूरे देश में प्रार्थना के रूप में गायी जाती है। इस प्रार्थना में निराला ने सरस्वती की वंदना पारंपरिक भावना से उनके पौराणिक रूप में की गयी है। जिसका

प्रमाण वीणा वादिनी का संबोधन है। अपनी भक्ति भावना को उन्होंने वैयक्तिकता की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की व्यापकता प्रदान की है। उस समय का परिवेश राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ ही पुनर्जागरण का भी था। भाषा साहित्य संस्कृति धर्म समाज आदि हर स्तर पर प्राचीन की नयी व्याख्याएँ अब नए तरीके से की जा रही है।

विशेष -

(1) यह निराला की प्रतिनिधि रचना है
(2) इस गीत में नव्यता का सांस्कृतिक आग्रह दिखायी देता है।
(3) कवि प्रकृति तथा मानवेतर प्राणियों में भी नव्यता भरने का वरदान माँगता है।
(4) 'नव नभ के नव विहग वृंद को नव पर नव स्वर दे' में नभ पूरे राष्ट्रीय परिवेश का प्रतीक बन जाता है।
(5) इस प्रार्थना के माध्यम से समाज में अभेद दर्शन एवं भावात्मक एकता की स्थापना की जा सकती है।

Scanned with CamScanner